Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन पक्ष की प्रासंगिकता

प्रो. छत्रसाल सिंह
आचार्य , शिक्षाशास्त्र, शिक्षा विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज , उत्तर प्रदेश
Email: chhatrasal.2011@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171223
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 111-114
December 2025
Submitted: 17 Nov. 2025
Revised: 27 Nov. 2025
Accepted: 12 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक मानी जाती है, जहाँ दर्शन का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय दर्शन केवल सैद्धांतिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन, आचरण, नैतिकता, शिक्षा, समाज और आध्यात्मिक उन्नयन से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह शोध लेख भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन के पहलू की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि समकालिक वैश्विक एवं भारतीय संदर्भ में इसका महत्व अद्वितीय है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य को आत्मबोध, सत्य की खोज और जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में प्रोत्साहित करना है। इस परंपरा में दर्शन केवल बौद्धिक विमर्श नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। वेदों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों और गीता में निहित दार्शनिक चिंतन भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास श्रुति, स्मृति, दर्शन, पुराण, आरण्यक, उपनिषद और विभिन्न शास्त्रों के माध्यम से हुआ है। इसका आधार ऋत, धर्म, सत्य और अहिंसा जैसे सार्वभौमिक सिद्धांत हैं। यहाँ ज्ञान को सिर्फ सूचना नहीं, बल्कि आत्मानुभूति का माध्यम माना गया है।

कुंजी शब्द: *भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन, वेद, उपनिषद, जीवन मूल्य, नैतिकता*

भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य को आत्मबोध, सत्य की खोज और जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख करना रहा है। इस परंपरा में दर्शन केवल बौद्धिक विमर्श नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। वेदों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों और गीता में निहित दार्शनिक चिंतन भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय दर्शन और शिक्षा का संबंध बेहद प्राचीन, गहरा और उद्देश्यपूर्ण है। भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को सिर्फ ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि आत्मबोध, नैतिक विकास और जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति का माध्यम माना गया है। भारतीय दर्शन ने शिक्षा को जीवन से जोड़ा है, जहाँ ज्ञान का उद्देश्य मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान, असत्य से सत्य और बंधन से स्वतंत्रता की ओर ले जाना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास श्रुति, स्मृति, दर्शन, पुराण, आरण्यक, उपनिषद एवं विभिन्न शास्त्रों के माध्यम से हुआ। इसका आधार ऋत, धर्म, सत्य और अहिंसा जैसे सार्वभौमिक सिद्धांत हैं। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि आत्मानुभूति का साधन माना गया है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि दर्शन, अपने प्राचीन सिद्धांतों और तार्किक पद्धतियों के माध्यम से, आधुनिक युग में भी मानव सभ्यता का नैतिक और बौद्धिक पथप्रदर्शक बना हुआ है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रो. छत्रसाल सिंह, आचार्य , शिक्षाशास्त्र, शिक्षा विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

How to cite this article:
सिंह, . छत्रसाल . (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन पक्ष की प्रासंगिकता. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 111–114. https://doi.org/10.5281/zenodo.18184694

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18184694
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

यह हमें सही कार्य और विचारों की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों में अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण है, ताकि हम एक अधिक टिकाऊ और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकें।

भारतीय दर्शन का स्वरूप

भारतीय दर्शन को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **आस्तिक दर्शन:** सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत
2. **नास्तिक दर्शन:** बौद्ध, जैन एवं चार्वाक

इन सभी दर्शनों का लक्ष्य दुःख से मुक्ति, आत्मकल्याण और मोक्ष की प्राप्ति रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन पक्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन—

- ज्ञान को अनुभव से जोड़ता है
- भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में संतुलन स्थापित करता है
- नैतिक मूल्यों एवं कर्तव्यबोध को विकसित करता है
- व्यक्ति एवं समाज दोनों के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है

उपनिषदों का "तत्त्वमसि" और गीता का कर्मयोग दर्शन आज भी जीवन की दिशा निर्धारित करता है।

समकालीन संदर्भ में दर्शन की प्रासंगिकता

समकालीन युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और तीव्र सामाजिक परिवर्तन का युग है, जिसमें हम वर्तमान समय में निवास कर रहे हैं। इस परिवर्तनशील और गतिशील परिदृश्य में दर्शन (Philosophy) की भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि दर्शन केवल व्यक्ति को सूचनाओं तक ही सीमित नहीं रखता, बल्कि यह उसे बोध, विवेक और मूल्यों की गहरी दृष्टि भी प्रदान करता है।

1. नैतिक संकट और मूल्यबोध

आज का समाज विभिन्न नैतिक संकटों, उपभोक्तावाद, भ्रष्टाचार, और आत्मकेन्द्रित जीवनशैली से जूझ रहा है। दर्शन इस संदर्भ में न केवल सही और गलत का विवेक विकसित करता है, बल्कि यह नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को भी बढ़ाता है। यह कर्तव्य, उत्तरदायित्व, और सामाजिक न्याय की गहरी समझ प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति अपने कार्यों के परिणामों को समझ सकें और उनके प्रति जवाबदेह बन सकें।

2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास में दर्शन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-प्रौद्योगिकी, क्लोनिंग, और डेटा गोपनीयता जैसे प्रमुख विषयों ने समाज में अनेक नैतिक प्रश्न खड़े किए हैं। दर्शन विज्ञान के क्षेत्र को मानवीय मूल्यों से जोड़कर महत्वपूर्ण दिशा निर्देश प्रदान करता है। यह न केवल यह सवाल करता है कि "क्या संभव है?" बल्कि यह भी कि "क्या उचित है?" जिससे हमें तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग का मार्गदर्शन मिलता है।

3. लोकतंत्र और नागरिक चेतना

समकालीन लोकतंत्र में आलोचनात्मक सोच का अभाव एक बड़ी चुनौती बन गया है। दर्शन तर्कशीलता और आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करने में सहायता करता है, साथ ही यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है। यह जागरूक और उत्तरदायी नागरिक तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन का संचार करते हैं।

4. मानसिक तनाव और जीवन-दर्शन

तेज़ जीवन-शैली, प्रतिस्पर्धा, और असुरक्षा ने मानसिक तनाव को बढ़ा दिया है, जिससे व्यक्ति अपनी आंतरिक संतुलन को खो सकता है। दर्शन व्यक्ति को जीवन के अर्थ और उद्देश्य पर गहराई से चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है, और आत्मबोध तथा संतुलन सिखाता है। भारतीय दर्शन, जैसे योग, वेदांत, और बौद्ध दर्शन, मानसिक शांति के व्यावहारिक मार्ग प्रदान करता है, जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं।

5. शिक्षा व्यवस्था में दर्शन की भूमिका

वर्तमान समय में समकालीन शिक्षा अक्सर रोजगार-केंद्रित हो गई है, जिससे शिक्षा के मूल्यात्मक पहलुओं की अनदेखी हो रही है। दर्शन शिक्षा को मानवीय और मूल्यपरक बनाता है, और यह सोचने, प्रश्न करने, और समझने की क्षमता को विकसित करने हेतु प्रेरित करता है। इसके साथ ही, यह NEP 2020 के बहुविषयक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

6. वैश्विक समस्याएँ और दार्शनिक दृष्टि

जलवायु परिवर्तन, युद्ध, आतंकवाद, और असमानता जैसी सामयिक वैश्विक समस्याएँ वैश्विक नैतिकता के निर्माण की आवश्यकता को उजागर करती हैं। ऐसे में दार्शनिक अवधारणाएँ, जैसे सह-अस्तित्व और वसुधैव कुटुम्बकम्, अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं, क्योंकि ये सभी को एकजुट होकर साझा समाधान निकालने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, समकालीन युग में दर्शन की भूमिका को न केवल पहचाना जाना चाहिए, बल्कि इसके महत्व को व्यापक रूप से समझा जाना चाहिए, ताकि हम इन जटिलता भरे समय में एक साधारण और विमर्शशील समाज का निर्माण कर सकें। वैश्विक और पर्यावरणीय संकट, जो जलवायु परिवर्तन, युद्ध, हिंसा और उपभोक्तावाद जैसे जटिल मुद्दों से उत्पन्न होते हैं, उनके समाधान की प्रक्रिया केवल तकनीकी उपायों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह आवश्यक है कि हम एक गहन दार्शनिक दृष्टि को भी अपनाएँ। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** जैसी प्राचीन दार्शनिक अवधारणाएँ हमें वैश्विक सह-अस्तित्व के मूल्यवान मार्ग को प्रदर्शित करती हैं, जो आज के संदर्भ में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं।

इस विषय पर चर्चा करते हुए, यह स्पष्ट होता है कि समकालीन संदर्भ में दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। दर्शन केवल मनुष्य को सोचने की क्षमता प्रदान करने तक सीमित नहीं है; इसके साथ ही, यह हमें सही दिशा में सोचने, निर्णय लेने, और एक नैतिक रूप से समृद्ध जीवन जीने की प्रेरणा देता है, जो मानवीय मूल्यों के प्रति हमारी जिम्मेदारी को उजागर करता है।

आधुनिक युग में जब भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और नैतिक संकट बढ़ रहे हैं, तब भारतीय दर्शन—

- मानसिक शांति एवं आत्मसंयम प्रदान करता है
- नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करता है
- शिक्षा को मूल्यपरक एवं जीवनोपयोगी बनाता है
- वैश्विक समस्याओं (तनाव, हिंसा, पर्यावरण संकट) का समाधान प्रस्तुत करता है

शिक्षा और भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन का सिद्धांत

भारतीय दर्शन जीवन, विश्व और ब्रह्म के तात्त्विक अध्ययन पर केन्द्रित है। यह वेद, उपनिषद, दर्शन-शास्त्र (षड्दर्शन), गीता, बौद्ध और जैन परंपराओं के जरिए विकसित हुआ। भारतीय दर्शन का मुख्य तत्व यह है कि सत्य की परख केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि अनुभवात्मक होती है।

शिक्षा का दार्शनिक आधारबोध

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य—

1. आत्मा की साक्षात्कार करना
2. विवेक और बुद्धि का विकास
3. नैतिकता और चरित्र का विकास
4. सामाजिक दायित्व का भावनात्मक संबंध
5. मोक्ष या आत्म-उद्धार की ओर अग्रसर करना

उपनिषदों में उल्लेखित है— "सा विद्या या विमुक्तये" यानी वही विद्या है, जो मुक्ति देती है।

वेदांत के सिद्धांत और अध्ययन

वेदांत दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही सर्वोच्च सत्य है और आत्मा ब्रह्म का एक हिस्सा है। शिक्षा का लक्ष्य इस सत्य को समझाना है। गुरु-शिष्य परंपरा के जरिए ज्ञान का आदान-प्रदान होता था, जहाँ शिक्षा अनुभव, साधना और संवाद पर निर्भर थी।

बौद्ध एवं जैन दर्शन में शिक्षा

बौद्ध दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य दुःख से मुक्ति और प्रज्ञा का विकास है। अष्टांगिक मार्ग शिक्षा का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करता है। जैन दर्शन में शिक्षा अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद पर आधारित है, जो व्यक्ति में सहिष्णुता और नैतिक चेतना का विकास करती है।

भारतीय शिक्षा में नैतिकता और मूल्य

भारतीय दर्शन में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नैतिक मूल्यों का विकास रहा है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, त्याग और कर्तव्यबोध शिक्षा के आधार स्तंभ हैं। शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगारोन्मुख नहीं, बल्कि समाजोन्मुख बनाती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

आधुनिक शिक्षा में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

आज की भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा प्रणाली में भारतीय दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। यह शिक्षा को मूल्यपरक, मानवतावादी और समग्र बनाने में सहायक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में रखने पर बल दिया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय दर्शन शिक्षा को जीवन की सार्थकता से जोड़ता है और मनुष्य को आत्मबोध, सत्य की खोज तथा मोक्ष की ओर उन्मुख करता है। समकालीन शिक्षा व्यवस्था में भारतीय दार्शनिक दृष्टि का समावेश मानव कल्याण और संतुलित समाज के निर्माण हेतु आवश्यक है।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) में भारतीय ज्ञान परंपरा

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल दिया गया है। दर्शन पक्ष विद्यार्थियों में—

- आलोचनात्मक चिंतन
- नैतिक विवेक
- सांस्कृतिक चेतना
- आत्मविश्वास

  का विकास करता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल भौतिक या लौकिक ज्ञान की प्राप्ति नहीं रहा है, बल्कि मनुष्य को आत्मबोध, सत्य की खोज तथा जीवन के परम लक्ष्य (पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की ओर उन्मुख करना रहा है। यह परंपरा मनुष्य को बाह्य जगत के साथ-साथ उसके आंतरिक अस्तित्व को समझने का मार्ग प्रशस्त करती है। उपनिषदों में वर्णित "आत्मानं विद्धि" तथा "सत्यमेव जयते" जैसे सूत्र यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय चिंतन में ज्ञान का अंतिम लक्ष्य आत्मा और ब्रह्म के एकत्व की अनुभूति है। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना या बौद्धिक कौशल तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे अनुभवजन्य, नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान से जोड़ा गया। इस परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक चेतना, कर्तव्यबोध और समग्र व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित रहा है। गुरु-शिष्य परंपरा, ध्यान, योग, साधना और विवेक के माध्यम से मनुष्य को जीवन के सत्य स्वरूप का साक्षात्कार कराया गया। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य को केवल सफल नहीं, बल्कि सार्थक, संतुलित और मुक्त जीवन की ओर अग्रसर करती है।

स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन पक्ष की प्रासंगिकता केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दर्शन मनुष्य को आत्मकेंद्रितता से उठाकर समष्टि कल्याण की ओर ले जाता है। अतः भारतीय दर्शन का संरक्षण, अध्ययन और व्यवहारिक अनुप्रयोग समय की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. राधाकृष्णन, एस., और मूर, सी. ए. (सं.). (2017)। भारतीय दर्शन में एक स्रोतपुस्तक। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
2. दासगुप्ता, एस. (2022)। भारतीय दर्शन का इतिहास (खंड 1-5)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. चटर्जी, एस., और दत्ता, डी.एम. (2014)। भारतीय दर्शन का एक परिचय. कलकत्ता विश्वविद्यालय.
4. शर्मा, के.वी. (2000)। भारतीय दर्शन: खंड I. मोतीलाल बनारसीदास।
5. शर्मा, ए. (1990). शास्त्रीय हिंदू विचार: एक परिचय। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. बाढ़, जी. (1996). हिंदू धर्म का एक परिचय. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. लॉय, डी. आर. (1988)। अद्वैत: तुलनात्मक दर्शन में एक अध्ययन। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. तिवारी, आर. (2012)। भारतीय ज्ञान प्रणाली और शिक्षाशास्त्र। आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।
9. बाशम, ए.एल. (1954)। द वंडर दैट वाज़ इंडिया। सिडगविक और जैक्सन।
10. भट्टाचार्य, एस. (1999)। भारतीय मनोविज्ञान की नींव (खंड 1 और 2)। पियर्सन शिक्षा. उपनिषद (ईश, केन, कठ)
11. श्रीमद्भगवद्गीता
12. सिन्हा, एच.पी. (2024)। भारतीय दर्शन का दर्शन: भारतीय दर्शन की रूपरेखा [भारतीय दर्शन सिंहावलोकन , मोतीलाल बनारसीदास.